SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-03, March- 2025
www.shikshasamvad.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक प्रभावशीलता: एक गहन विश्लेषण

आकाश कुमार
शोधकर्ता
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय
बरेली

डॉ. प्रतिभा सागर
आचार्य
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय
बरेली

सारांश

इस शोध-पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षक प्रभावशीलता का व्यापक अध्ययन करना है। इसमें शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत शिक्षक प्रभावशीलता में सुधार के प्रयासों, और प्रभावशीलता को बढ़ाने और उनके घटकों का विश्लेषण शामिल है। इस शोध- पत्र से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत किए गए सुधार शिक्षक प्रभावशीलता में किस प्रकार से योगदान दे सकते हैं और भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और समावेशी बना सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को सुधारने और आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई है। इस नीति में शिक्षकों की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

कूट शब्द- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 घटक, शिक्षक प्रभावशीलता, तकनीकी आदि।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कब और क्यों आयी

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली पर नियंत्रण रखने और निर्देशन देने के लिए उस राष्ट्र के प्रशासन के द्वारा कुछ समितियां बनायीं जाती हैं और उन समितियों की बैठकों में बहुत से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की जाती है उसी चर्चा के समय कुछ प्रपत्र तैयार किये जाते हैं इसी तरह का शिक्षा से जुड़ा हुआ प्रपत्र है शिक्षा नीति जिसकी शुरुआत वर्ष 1968 ई. में हुयी थी जिसमें शिक्षा से सम्बंधित तथ्यों की चर्चा की गयी थी इसके ठीक अट्ठारह वर्ष बाद वर्ष 1986 में दूसरी शिक्षा नीति भारतीय प्रधानमंत्री श्री राजीव कुमार जी के कार्यकाल में पहली शिक्षा नीति का संशोधित प्रारूप था जिसको वर्ष 1992 में आचार्य राममूर्ति समिति के द्वारा कुछ तथ्यों में संशोधन करने की बात की गयी थी जिसके पूरे 34 वर्ष बाद 2020 में भारतीय प्रधामंत्री श्री नरेन्द्र नाथ दामोदर दास मोदी जी के कार्यकाल में इस नीति की 29 जुलाई 2020 में घोषणा की

गयी थी नई शिक्षा नीति 2020 का प्रारूप इसरो के पूर्व चीफ पद से सेवानिवृत्त डॉ. के. कस्तूरीरंगन के द्वारा तैयार किया गया था जिसमें 27 अध्याय और 04 भाग हैं इस नीति को लाने का मुख्य प्रयास इसलिए किया गया क्योंकि पहली शिक्षा नीति की बैठक में यह तय किया गया था कि प्रत्येक दशक में भारत की शिक्षा नीति में संशोधन किये जाते रहेंगे लेकिन प्रशासन के द्वारा इसको गहराई से न लिए जाने या जो भी कारण रहे हैं उनको ध्यान में रखते हुए आखिर तीन दशक के बाद इस नीति को लाया गया और लागू किया गया पिछली नीतियों में कुछ संशोधन करने के बाद इस नीति के द्वारा 2030 तक 3-16 वर्ष तक के बालकों और बालिकाओं का सर्वांगीण विकास करने हेतु सभी पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए समावेशी, गुणवत्तापूर्ण, तकनीकी और बहुविषयक शिक्षा देने का प्रावधान किया गया है इस नीति को सफल बनाने के लिए दिव्यांग, महिला, प्रौढ, अल्पसंख्यक, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, उभय लिंग वाले विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने और शिक्षकों को तकनीकी प्रशिक्षण देने हेतु चार बर्षीय प्रशिक्षण कोर्स कराने व विद्यालय प्रबंधन के लिए विद्यालयों के कायाकल्प हेतु अनुदान की राशि बढ़ाने और तकनीकी उपकरणों को लगान सुनिश्चित किया गया है जैसे दिव्यांग बच्चों के लिए रैंप या उनकी सुविधानुसार शौंचालय आदि का निर्माण करने की बात की गयी है

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक अवलोकन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा को समावेशी, सुलभ, न्यायसंगत और गुणवत्तापूर्ण बनाना है। यह नीति 34 वर्षों के अंतराल के बाद लाई गई है और 21वीं सदी की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है।

नीति के प्रमुख उद्देश्य:

समग्र और बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देना। इस उद्देश्य के अंतर्गत सामाजिक, बौध्दिक, भावात्मक, नैतिक एवं सौन्दर्यात्मक आदि सभी क्षमताओं वाले मनुष्यों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये जिसमें कला, भाषा, विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान और व्यावसायिक तकनीकी में सर्वांगीण विकास किया जा सके तथा कला शिक्षा के विद्यार्थियों को भी आगे चलकर विज्ञान की शिक्षा प्रदान की जा सके। शिक्षकों की सशक्त भूमिका और पेशेवर विकास। डिजिटल शिक्षा और प्रौद्योगिकी का उपयोग। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) पर जोर। वैश्विक मानकों के साथ उच्च शिक्षा को सुसंगत बनाना। स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहन। शिक्षकों से संबंधित पहलें । चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP)। सतत व्यावसायिक विकास (CPD)। शिक्षकों के मूल्यांकन के लिए एक मानकीकृत प्रणाली। शिक्षकों को प्रशासनिक कार्यों से मुक्त कर शिक्षण पर केंद्रित रखना। डिजिटल तकनीक के उपयोग के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।

शिक्षक प्रभावशीलता का अर्थ और परिभाषाएं :

शिक्षक प्रभावशीलता उस क्षमता और दक्षता को दर्शाती है, जिसके माध्यम से शिक्षक छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में योगदान देते हैं। इसमें विषय ज्ञान, शिक्षण कौशल, प्रबंधन, प्रेरणा, और छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण शामिल हैं।

शिक्षक-प्रभावशीलता की अवधारणा का सम्बन्ध शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से है, अर्थात एक शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से अपने शिक्षार्थियों को किस प्रकार सन्तुष्ट रखता है, वह स्तर शिक्षक की प्रभावशीलता का घोतक है। किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता का मापन उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त संतुष्टि स्तर एवं शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर से होता है। इस प्रकार शिक्षक-प्रभावशीलता का सम्बन्ध उसकी शिक्षण निष्पादन क्षमता से है, जिसे वह अपने शिक्षण कौशलों व ज्ञान के माध्यम से शिर्ष्या को पढ़ाते हुए अर्जित करते हैं। अमेरिकन रिसर्च एसोसिएशन (1952-53) के अनुसार "शिक्षक प्रभावशीलता को शिक्षण के आधारभूत शिक्षण कौशल, समक्ष, कार्य, आदतें,

वांछनीय अभिवृत्ति, मूल्य, निर्णय एवं छात्रों के व्यक्तिगत समायोजन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" रॉयन (1969) के द्वारा "उस अध्यापक को प्रभावशाली माना जाता है, जो छात्रों के मूल कौशलों, अभिवृत्ति, मूल्य एवं उचित कार्य की आदतों को समझते हैं।" एन० ए० फ्लैण्डर्स और साइमन (1969) के शब्दों में "अध्यापक प्रभावशीलता की विशेषताएँ, शिक्षण कार्यों और अध्यापन के परिणाम से सम्बन्धित हैं।"

शिक्षक प्रभावशीलता को मापने वाले घटक: पेशेवर ज्ञान और योग्यता। विषय और पेडागॉजिकल ज्ञान। छात्रों की विविध आवश्यकताओं को समझने की क्षमता। कक्षा प्रबंधन और अनुशासन। सकारात्मक और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण। समय और संसाधनों का प्रबंधन। छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण।छात्रों के साथ संवाद और उनकी भागीदारी। व्यक्तिगत ध्यान और मार्गदर्शन। निरंतर सीखने और सुधार की प्रवृत्ति। नई शिक्षण विधियों को अपनाना। प्रौद्योगिकी और डिजिटल टूल्स का उपयोग।

शिक्षक प्रभावशीलता का महत्व: शिक्षा की गुणवत्ता सीधे शिक्षकों की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। एक प्रभावी शिक्षक -छात्रों के सीखने के परिणामों को सुधारता है। छात्रों में आत्म-निर्भरता और सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है। समाज में नेतृत्व और प्रेरणा का स्रोत बनता है। शिक्षक प्रभावशीलता किसी भी शिक्षा प्रणाली और समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका सीधा असर छात्रों, स्कूलों और राष्ट्र के भविष्य पर पड़ता है। यहाँ इसके कुछ प्रमुख महत्व दिए गए हैं:

एक प्रभावी शिक्षक छात्रों को बेहतर तरीके से पढ़ाता है, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ती है। वे छात्रों को विषय को गहराई से समझने, समस्याओं को हल करने और आलोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद करते हैं। प्रभावी शिक्षक केवल अकादमिक ज्ञान पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, बल्कि छात्रों के सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे छात्रों को आत्मविश्वासी, जिम्मेदार नागरिक और अच्छे इंसान बनने में मदद करते हैं। एक प्रभावी शिक्षक छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। वे कक्षा में एक सकारात्मक और आकर्षक माहौल बनाते हैं, जिससे छात्र सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं और स्कूल आने के लिए उत्सुक रहते हैं। प्रभावी शिक्षक छात्रों में आवश्यक कौशल जैसे संचार, सहयोग, रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने में मदद करते हैं, जो उनके भविष्य के जीवन और करियर के लिए महत्वपूर्ण हैं। प्रभावी शिक्षक नई शिक्षण विधियों और तकनीकों को अपनाने में सक्षम होते हैं। वे छात्रों की विविध आवश्यकताओं को समझते हैं और अपने शिक्षण को उसके अनुसार अनुकूलित करते हैं, जिससे सभी छात्रों को समान रूप से लाभ होता है। जो छात्र प्रभावी शिक्षकों से सीखते हैं, वे उच्च शिक्षा और भावी करियर के लिए बेहतर तरीके से तैयार होते हैं। उन्हें आवश्यक ज्ञान और कौशल मिलते हैं जो उन्हें सफलता प्राप्त करने में मदद करते हैं। प्रभावी शिक्षक स्कूल के माहौल को सकारात्मक बनाते हैं। वे छात्रों, सहकर्मियों और अभिभावकों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करते हैं, जिससे एक सहयोगी और सहायक सीखने का वातावरण बनता है। एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली, जिसके केंद्र में प्रभावी शिक्षक होते हैं, राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह कुशल और जानकार कार्यबल तैयार करती है जो देश की प्रगति में सहायक होता है।शिक्षक न केवल मौजूदा ज्ञान को प्रसारित करते हैं, बल्कि वे छात्रों को नए ज्ञान का अन्वेषण और उत्पादन करने के लिए भी प्रेरित करते हैं, जिससे समाज में नवाचार और प्रगति को बढ़ावा मिलता है।संक्षेप में, शिक्षक प्रभावशीलता शिक्षा की रीढ़ है। यह छात्रों के भविष्य को आकार देने, सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करने और एक मजबूत, प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक प्रभावशीलता : प्रमुख सुधार और पहलें

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षकों की प्रभावशीलता को सुधारने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। नीचे विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है:

1. शिक्षक प्रशिक्षण का पुनर्गठन: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) को पेश किया है, जो विषयगत ज्ञान और पेडागॉजिकल कौशल को एकीकृत करता है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को बेहतर पेशेवर तैयार करता है। इससे यह लाभ होगा कि शिक्षकों को प्रारंभ से ही व्यावसायिक रूप से तैयार किया जा सकेगा। जिससे प्रशिक्षण में गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकेगी।

2. शिक्षकों की स्वायत्तता और सशक्तिकरण: नीति ने शिक्षकों को अधिक स्वायत्तता प्रदान की है, ताकि वे अपने शिक्षण में नवाचार और लचीलापन ला सकें। शिक्षकों को प्रशासनिक कार्यों से मुक्त रखने पर जोर दिया जायेगा। शिक्षकों को नीति निर्माण में शामिल भी किया जायेगा। जिससे उनको खुद का सशक्तिकरण करने का अवसर मिलेगा।

3. सतत व्यावसायिक विकास (CPD): शिक्षकों को अद्यतन रखने के लिए वार्षिक 50 घंटे के प्रशिक्षण अनिवार्य किए गए हैं। जिसका लक्ष्य है नई शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान करना। डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके अपने शिक्षण कार्य बेहतर और प्रभावशाली बनाना इत्यादि है।

4. डिजिटल शिक्षा का समावेश: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने डिजिटल शिक्षा को प्राथमिकता दी है। शिक्षकों को डिजिटल टूल्स और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। जैसे- DIKSHA पोर्टल का उपयोग कैसे किया जा सकता है। साथ ही डिजिटल सामग्री निर्माण को छात्रों के लिए किस प्रकार तैयार करना है आदि का भी ज्ञान कराया जायेगा।

5. शिक्षक मूल्यांकन और प्रोत्साहन: नीति में शिक्षकों के प्रदर्शन के लिए एक मानकीकृत मूल्यांकन प्रणाली की सिफारिश की गयी है। यह मूल्यांकन पारदर्शी और उद्देश्यपूर्ण होगा। जिसका लक्ष्य शिक्षकों की क्षमताओं को पहचानना और सही दिशा में उपयोग करना है। उनकी व्यक्तिगत त्रुटियों को सुधार करने की संभावनाएँ खोजना।

6. मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं में शिक्षण: नीति में कक्षा 5 तक के विद्यार्थियों को स्थानीय एवं मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की सिफारिश की गयी है। इसके लिए शिक्षकों को स्थानीय भाषाओं में प्रशिक्षित किया जाएगा जिससे शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच शिक्षक प्रक्रिया को रोचक और प्रभावी बनाया जा सके।

शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाने में चुनौतियाँ और उनका समाधान

हालांकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षकों की प्रभावशीलता को सुधारने के लिए कई पहलें की हैं, फिर भी इसके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ हैं:

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ाने की चुनौतियां

ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए कुछ सामान्य और कुछ विशिष्ट चुनौतियां हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में चुनौतियां:

योग्य शिक्षकों की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी होती है। शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण स्कूलों में बेहतर सुविधाओं और अवसरों की कमी के कारण शिक्षक वहां जाने से कतराते हैं।

बुनियादी ढांचे का अभाव: ग्रामीण स्कूलों में अक्सर पर्याप्त भौतिक और बुनियादी सुविधाओं (जैसे अच्छी कक्षाएं, प्रयोगशालाएं, शौचालय, पेयजल) का अभाव होता है, जिससे शिक्षण-अधिगम का माहौल प्रभावित होता है।

शैक्षिक सामग्री की कमी: ग्रामीण स्कूलों में अक्सर नवीनतम शैक्षिक सामग्री, डिजिटल संसाधनों और शिक्षण सहायक सामग्री की कमी होती है, जो प्रभावी शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

गैर-शैक्षणिक कार्यों का बोझ: शिक्षकों को अक्सर जनगणना, चुनाव ड्यूटी जैसे विभिन्न गैर-शैक्षणिक कार्यों में लगाया जाता है, जिससे उनके शिक्षण समय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

पेशेवर विकास के अवसरों की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास, प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन के अवसर सीमित होते हैं, जिससे वे नवीनतम शिक्षण विधियों और तकनीकों से अपडेट नहीं रह पाते।

सामाजिक और आर्थिक बाधाएं: ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों के परिवारों की आर्थिक स्थिति और सामाजिक-पारिवारिक बाधाएं भी शिक्षा को प्रभावित करती हैं, जिससे शिक्षकों के लिए प्रभावी ढंग से पढ़ाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

प्रेरणा की कमी: कम वेतन, दूरस्थ स्थान और करियर में प्रगति के सीमित अवसरों के कारण ग्रामीण शिक्षकों में प्रेरणा की कमी हो सकती है।

शहरी क्षेत्रों में चुनौतियां:

बड़ी कक्षाओं का आकार: शहरी स्कूलों में छात्रों की संख्या अक्सर बहुत अधिक होती है, जिससे शिक्षकों के लिए प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देना मुश्किल हो जाता है।

विविध पृष्ठभूमि वाले छात्र: शहरी स्कूलों में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्र होते हैं, जिनके सीखने की ज़रूरतें अलग-अलग हो सकती हैं। शिक्षकों को इस विविधता को संबोधित करने के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता होती है।

तकनीकी संसाधनों का असमान उपयोग: शहरी क्षेत्रों में तकनीकी संसाधन तो उपलब्ध होते हैं, लेकिन उनका प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना एक चुनौती हो सकती है, खासकर यदि शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण न मिला हो।

अभिभावकों की उच्च अपेक्षाएं और दबाव: शहरी माता-पिता अक्सर अपने बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन के बारे में उच्च अपेक्षाएं रखते हैं, जिससे शिक्षकों पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है।

प्रतिस्पर्धा और तनाव: शहरी वातावरण में शिक्षकों को अक्सर उच्च प्रतिस्पर्धा और तनाव का सामना करना पड़ता है, जो उनकी प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकता है।

शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए समाधान:

इन चुनौतियों का सामना करने और शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपायों पर विचार किया जा सकता है:

योग्य शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना: ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षकों की नियुक्ति के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना (जैसे बेहतर वेतन, आवास सुविधाएं, विशेष भत्ते)।शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार करना।

बुनियादी ढांचे में सुधार: ग्रामीण और शहरी दोनों ही स्कूलों में पर्याप्त और आधुनिक बुनियादी सुविधाएं (स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल बोर्ड, अच्छी प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय) उपलब्ध कराना। स्वच्छता और सुरक्षा सुनिश्चित करना।

पेशेवर विकास के अवसर बढ़ाना: शिक्षकों के लिए नियमित और गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक विकास कार्यक्रम आयोजित करना, जिसमें नवीनतम शिक्षण विधियां, डिजिटल साक्षरता और बाल-केंद्रित शिक्षा शामिल हों। ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का उपयोग करना ताकि दूरस्थ क्षेत्रों के शिक्षक भी लाभ उठा सकें।

शिक्षण-अधिगम सामग्री की उपलब्धता: दोनों क्षेत्रों में स्कूलों को पर्याप्त और अद्यतन शैक्षिक सामग्री, पाठ्यपुस्तकों और डिजिटल संसाधनों से लैस करना।शिक्षकों को शिक्षण सहायक सामग्री विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना।

गैर-शैक्षणिक कार्यों का बोझ कम करना: शिक्षकों को गैर-शैक्षणिक कार्यों से मुक्त करना ताकि वे पूरी तरह से शिक्षण पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

प्रेरणा और मान्यता: शिक्षकों को नियमित रूप से प्रोत्साहित और सम्मानित करना। बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहन और करियर में प्रगति के अवसर प्रदान करना।

समुदाय की भागीदारी: शिक्षा में समुदाय और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना ताकि वे स्कूल और शिक्षकों का समर्थन कर सकें।

शिक्षक-छात्र अनुपात में सुधार: विशेष रूप से शहरी स्कूलों में शिक्षक-छात्र अनुपात को कम करना ताकि शिक्षक प्रत्येक छात्र पर बेहतर ध्यान दे सकें।

तकनीकी एकीकरण:

शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों के उपयोग का प्रशिक्षण देना। शिक्षा में प्रौद्योगिकी के प्रभावी एकीकरण को बढ़ावा देना।

इन चुनौतियों का समाधान करके और उपरोक्त उपायों को लागू करके, हम ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ा सकते हैं, जिससे अंततः छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार होगा और शिक्षा में असमानता कम होगी।

2. तकनीकी साक्षरता की कमी

कई शिक्षक डिजिटल टूल्स और प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में कुशल नहीं हैं। शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाने में तकनीकी साक्षरता की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। आज के डिजिटल युग में, जब शिक्षा तेजी से प्रौद्योगिकी-आधारित हो रही है, शिक्षकों का तकनीकी रूप से कुशल होना अत्यंत आवश्यक है। यदि शिक्षक स्वयं तकनीकी उपकरणों और डिजिटल संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सक्षम नहीं हैं, तो वे छात्रों को 21वीं सदी के कौशल सिखाने में कैसे सक्षम होंगे?

तकनीकी साक्षरता की कमी से उत्पन्न चुनौतियाँ:

डिजिटल शिक्षण उपकरणों का अप्रभावी उपयोग: यदि शिक्षकों को स्मार्टबोर्ड, प्रोजेक्टर, या कंप्यूटर जैसी बुनियादी तकनीकों का उपयोग करना नहीं आता, तो इन महंगे उपकरणों का पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता।

ऑनलाइन संसाधनों तक सीमित पहुँच: इंटरनेट पर शैक्षिक सामग्री, वीडियो, सिमुलेशन और इंटरैक्टिव अभ्यास का खजाना मौजूद है। तकनीकी साक्षरता की कमी के कारण शिक्षक इन संसाधनों का पता लगाने और उन्हें अपनी कक्षाओं में एकीकृत करने में विफल रहते हैं।

दूरस्थ शिक्षा में बाधा: कोविड-19 महामारी ने दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता को उजागर किया। जिन शिक्षकों में तकनीकी साक्षरता की कमी थी, उन्हें ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करने, असाइनमेंट भेजने या छात्रों के साथ डिजिटल रूप से जुड़ने में गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

छात्रों की रुचि बनाए रखने में कठिनाई: आज के छात्र डिजिटल रूप से निपुण हैं और उन्हें पारंपरिक शिक्षण विधियां अक्सर नीरस लगती हैं। तकनीकी उपकरणों का उपयोग करके शिक्षण को अधिक आकर्षक और इंटरैक्टिव बनाया जा सकता है, लेकिन तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण शिक्षक ऐसा करने में असमर्थ होते हैं।

व्यक्तिगत सीखने के अवसरों की कमी: विभिन्न शिक्षण शैलियों वाले छात्रों के लिए व्यक्तिगत सीखने के अनुभव प्रदान करने में प्रौद्योगिकी बहुत सहायक हो सकती है। तकनीकी साक्षरता की कमी शिक्षकों को अनुकूली सीखने के प्लेटफार्मों और व्यक्तिगत शैक्षिक अनुप्रयोगों का उपयोग करने से रोकती है।

डाटा-संचालित शिक्षण का अभाव: शैक्षिक सॉफ्टवेयर और प्लेटफ़ॉर्म छात्रों के प्रदर्शन पर मूल्यवान आँकड़े प्रदान कर सकते हैं। तकनीकी रूप से अशिक्षित शिक्षक इस डेटा का विश्लेषण करके अपनी शिक्षण रणनीतियों को बेहतर बनाने में असमर्थ होते हैं।

पेशेवर विकास में बाधा: कई शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास कार्यक्रम अब ऑनलाइन उपलब्ध हैं। तकनीकी साक्षरता की कमी इन अवसरों तक पहुँचने में बाधा बन सकती है, जिससे शिक्षकों का कौशल अद्यतन नहीं हो पाता।

समाधान के रूप में तकनीकी साक्षरता बढ़ाना: शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए तकनीकी साक्षरता की कमी को दूर करना बेहद जरूरी है। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

नियमित और व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम: शिक्षकों के लिए अनिवार्य और निरंतर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, जो उन्हें बुनियादी कंप्यूटर कौशल से लेकर विशिष्ट शैक्षिक सॉफ्टवेयर और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के उपयोग तक सब कुछ सिखाएं।इन प्रशिक्षणों को आकर्षक और व्यावहारिक बनाया जाए, जिसमें वास्तविक कक्षा परिदृश्यों का अनुकरण किया जाए।

बुनियादी ढांचे में सुधार: स्कूलों में पर्याप्त कंप्यूटर लैब, इंटरनेट कनेक्टिविटी और अन्य आवश्यक डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराए जाएं।शिक्षकों को उनके व्यक्तिगत उपयोग के लिए लैपटॉप या टैबलेट जैसे उपकरण उपलब्ध कराने पर विचार किया जाए।

सहकर्मी-से-सहकर्मी सीखने को बढ़ावा देना: शिक्षकों को एक-दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। अनुभवी और तकनीकी रूप से निपुण शिक्षक अपने सहकर्मियों को प्रशिक्षित कर सकते हैं।स्कूलों में "टेक-एम्बेसडर" या "डिजिटल चैंपियन" नियुक्त किए जा सकते हैं जो अन्य शिक्षकों की सहायता करें।

शिक्षकों के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन: जो शिक्षक अपनी तकनीकी साक्षरता में सुधार करते हैं, उन्हें प्रोत्साहन और मान्यता दी जाए। तकनीकी कौशल के आधार पर करियर में प्रगति के अवसर प्रदान किए जाएं।

आसान और उपयोगकर्ता-अनुकूल उपकरण: ऐसे शैक्षिक सॉफ्टवेयर और प्लेटफॉर्म को बढ़ावा दिया जाए जो उपयोगकर्ता-अनुकूल हों और जिनका उपयोग करना आसान हो, खासकर उन शिक्षकों के लिए जो तकनीकी रूप से कम साक्षर हैं।

निरंतर समर्थन और हैंडहोल्डिंग: प्रशिक्षण के बाद भी शिक्षकों को निरंतर तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई जाए। इसके लिए हेल्प डेस्क या ऑनलाइन फ़ोरम बनाए जा सकते हैं।

पाठ्यक्रम में तकनीकी एकीकरण: शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में तकनीकी साक्षरता को एक अनिवार्य घटक के रूप में शामिल किया जाए। तकनीकी साक्षरता केवल एक कौशल नहीं है, बल्कि यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एक आवश्यकता है। इस चुनौती को सफलतापूर्वक संबोधित करके ही हम अपने शिक्षकों को 21वीं सदी के छात्रों को सशक्त बनाने के लिए तैयार कर सकते हैं।

3. प्रशिक्षण में गुणवत्ता की कमी के रूप में चुनौती

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता में असमानता है, जो शिक्षकों की प्रभावशीलता को प्रभावित करती है। शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ाने में प्रशिक्षण में गुणवत्ता की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। यह समस्या ग्रामीण और शहरी, दोनों ही क्षेत्रों में शिक्षकों के प्रदर्शन और छात्रों के सीखने के परिणामों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। प्रशिक्षण में गुणवत्ता की कमी से तात्पर्य है कि शिक्षकों को जो प्रशिक्षण दिया जाता है, वह अपर्याप्त, पुराना, या प्रभावी शिक्षण के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करने में असमर्थ होता है। यह कई तरह से एक चुनौती बन जाती है:

पुराने पाठ्यक्रम और विधियाँ: कई शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम अभी भी पुराने पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों पर आधारित हैं। वे छात्रों की वर्तमान जरूरतों, नई शिक्षण तकनीकों और बदलते शैक्षिक परिदृश्य के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते।

व्यावहारिक अनुभव का अभाव: प्रशिक्षण अक्सर सैद्धांतिक होता है और शिक्षकों को वास्तविक कक्षा परिस्थितियों से निपटने के लिए पर्याप्त व्यावहारिक अनुभव या सिमुलेशन प्रदान नहीं करता। इससे वे कक्षा में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार नहीं होते।

नवीनतम शिक्षण तकनीकों से अनभिज्ञता: डिजिटल युग में, प्रौद्योगिकी शिक्षा का एक अभिन्न अंग बन गई है। लेकिन प्रशिक्षण में गुणवत्ता की कमी के कारण शिक्षक अक्सर स्मार्ट बोर्ड, शैक्षिक ऐप्स, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म और डेटा-आधारित शिक्षण जैसी नवीनतम तकनीकों के उपयोग में प्रशिक्षित नहीं होते।

विषय-विशिष्ट विशेषज्ञता की कमी: शिक्षकों को अक्सर उनके विषय-क्षेत्र में गहन प्रशिक्षण नहीं मिल पाता, खासकर उच्च कक्षाओं के लिए। इससे वे जटिल अवधारणाओं को प्रभावी ढंग से समझाने में असमर्थ रहते हैं।

बाल-केंद्रित शिक्षा का अभाव: आधुनिक शिक्षा बाल-केंद्रित दृष्टिकोण पर जोर देती है, जहाँ प्रत्येक बच्चे की सीखने की शैली और गति पर ध्यान दिया जाता है। यदि प्रशिक्षण में इसकी कमी होती है, तो शिक्षक विभिन्न सीखने की जरूरतों वाले छात्रों को संबोधित करने में सक्षम नहीं होते।

सतत व्यावसायिक विकास की कमी: एक बार का प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं होता। शिक्षकों को लगातार अपने कौशल को अपडेट करने की आवश्यकता होती है। गुणवत्तापूर्ण सतत व्यावसायिक विकास (Continuing Professional Development - CPD) कार्यक्रमों की कमी शिक्षकों को नए शोध, शिक्षण पद्धतियों और शैक्षिक नीतियों से अनभिज्ञ रखती है।

विशेष जरूरतों वाले छात्रों के लिए अपर्याप्त प्रशिक्षण: समावेशी शिक्षा के युग में, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को विशिष्ट कौशल की आवश्यकता होती है। गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण की कमी उन्हें इन छात्रों को प्रभावी ढंग से पढ़ाने से रोकती है।

मूल्यांकन और प्रतिक्रिया की कमी: प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अक्सर शिक्षकों के प्रदर्शन का उचित मूल्यांकन या उन्हें रचनात्मक प्रतिक्रिया (constructive feedback) प्रदान करने की प्रणाली नहीं होती, जिससे सुधार की गुंजाइश कम हो जाती है।

प्रेरणा और संलग्नता की कमी: यदि प्रशिक्षण नीरस और अप्रासंगिक लगता है, तो शिक्षक इसमें रुचि नहीं लेते, जिससे प्रशिक्षण का उद्देश्य ही विफल हो जाता है।

शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए समाधान:

प्रशिक्षण में गुणवत्ता की कमी की चुनौती से निपटने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

आधुनिक और प्रासंगिक पाठ्यक्रम: शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को नवीनतम शैक्षिक अनुसंधान, शिक्षण विधियों और प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतन किया जाए। पाठ्यक्रम में बाल-मनोविज्ञान, समावेशी शिक्षा और मूल्यांकन तकनीकों को शामिल किया जाए।

व्यावहारिक और अनुभवात्मक प्रशिक्षण: प्रशिक्षण में व्यावहारिक कक्षा प्रबंधन, शिक्षण अभ्यास और सिमुलेशन पर अधिक जोर दिया जाए। शिक्षकों को अनुभवी आकाओं (mentors) के साथ काम करने और सहकर्मी अवलोकन (peer observation) के अवसर दिए जाएं।

प्रौद्योगिकी एकीकरण: शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म और शैक्षिक सॉफ्टवेयर का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए व्यापक प्रशिक्षण दिया जाए। उन्हें डिजिटल साक्षरता और साइबर सुरक्षा के बारे में भी शिक्षित किया जाए।

सतत व्यावसायिक विकास (CPD): शिक्षकों के लिए नियमित, लक्षित और मांग-आधारित CPD कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। इन कार्यक्रमों को उनकी व्यक्तिगत जरूरतों और विषय-क्षेत्रों के अनुसार अनुकूलित किया जा सकता है। ऑनलाइन मॉड्यूल और वेबिनार का उपयोग दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुंच बनाने के लिए किया जा सकता है।

विषय-विशिष्ट गहन प्रशिक्षण: शिक्षकों को उनके विषय-क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए विशेष कार्यशालाएं और प्रशिक्षण सत्र प्रदान किए जाएं। उन्हें अपने विषय के नवीनतम विकास से अवगत कराया जाए।

विशेषज्ञ प्रशिक्षकों का उपयोग: प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए अनुभवी और योग्य प्रशिक्षकों को नियुक्त किया जाए, जो स्वयं आधुनिक शिक्षण विधियों में पारंगत हों। शिक्षण संस्थानों और विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग किया जा सकता है।

प्रतिक्रिया और मूल्यांकन प्रणाली: प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का नियमित मूल्यांकन किया जाए। शिक्षकों को प्रशिक्षण के दौरान और बाद में रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान की जाए ताकि वे अपनी कमजोरियों पर काम कर सकें।

प्रेरणा और प्रोत्साहन: प्रशिक्षण को आकर्षक और उपयोगी बनाया जाए ताकि शिक्षक इसमें रुचि लें। प्रशिक्षण पूरा करने वाले शिक्षकों को मान्यता और प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएं। शिक्षक उत्कृष्टता के लिए प्रोत्साहन योजनाएं लागू की जाएं। इन उपायों को अपनाकर, हम शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं, जिससे शिक्षक अधिक प्रभावी बनेंगे और छात्रों के लिए सीखने का अनुभव बेहतर होगा।

4. भारी कार्यभार से शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव

शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाने के मार्ग में भारी कार्यभार एक महत्वपूर्ण चुनौती है। जब शिक्षकों पर काम का अत्यधिक बोझ होता है, तो उनकी शिक्षण गुणवत्ता और छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान देने की क्षमता बुरी तरह प्रभावित होती है। शिक्षक का भारी कार्यभार कई रूपों में उनकी प्रभावशीलता को कम करता है:

कम गुणवत्ता वाला शिक्षण: जब शिक्षकों के पास बहुत सारी कक्षाएं होती हैं या उन्हें कई विषयों को पढ़ाना होता है, तो वे प्रत्येक पाठ की तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं दे पाते। इससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है और छात्र सीखने में पिछड़ सकते हैं।

व्यक्तिगत ध्यान का अभाव: बड़ी कक्षाएं और अधिक छात्रों की संख्या शिक्षकों को प्रत्येक छात्र की सीखने की जरूरतों को समझने और उन्हें व्यक्तिगत सहायता प्रदान करने से रोकती है। इससे कमजोर छात्रों को विशेष मदद नहीं मिल पाती।

मूल्यांकन और प्रतिक्रिया में कमी: अत्यधिक कार्यभार के कारण शिक्षकों को छात्रों के गृहकार्य और टेस्ट को जांचने और प्रभावी प्रतिक्रिया देने में कठिनाई होती है। उचित प्रतिक्रिया के अभाव में छात्र अपनी गलतियों से नहीं सीख पाते।

गैर-शैक्षणिक कार्यों का बोझ: शिक्षकों को अक्सर प्रशासनिक कार्य, जनगणना, चुनाव ड्यूटी, रिपोर्ट तैयार करना और अन्य गैर-शैक्षणिक कार्यों में लगाया जाता है। यह उनके मुख्य शिक्षण कार्य से समय चुरा लेता है और उन्हें थका देता है।

पेशेवर विकास में बाधा: भारी कार्यभार के कारण शिक्षकों को नए शिक्षण तरीकों, तकनीकों और डिजिटल उपकरणों को सीखने के लिए समय नहीं मिल पाता। वे नवीनतम शैक्षिक नवाचारों से अपडेट नहीं रह पाते, जिससे उनकी शिक्षण क्षमता सीमित हो जाती है।

तनाव और बर्नआउट: लगातार अत्यधिक काम का बोझ शिक्षकों में तनाव, थकान और "बर्नआउट" (मानसिक और शारीरिक थकावट) का कारण बनता है। इससे उनकी प्रेरणा कम होती है, अनुपस्थिति बढ़ती है और कुछ मामलों में वे शिक्षण पेशा ही छोड़ देते हैं।

नवाचार की कमी: जब शिक्षक हर समय काम के बोझ तले दबे रहते हैं, तो उनके पास रचनात्मकता और नवाचार के लिए बहुत कम ऊर्जा या समय बचता है। वे नए शिक्षण मॉडल या दिलचस्प गतिविधियों को कक्षा में लागू नहीं कर पाते।

पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव: कार्यभार का बढ़ता दबाव शिक्षकों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है, जिससे उनका समग्र कल्याण और नौकरी से संतुष्टि कम होती है।

भारी कार्यभार को कम करने और प्रभावशीलता बढ़ाने के उपाय

शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए भारी कार्यभार को कम करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

युक्तियुक्त शिक्षक-छात्र अनुपात: यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक कक्षा में छात्रों की संख्या प्रबंधनीय हो, ताकि शिक्षक प्रत्येक छात्र पर पर्याप्त ध्यान दे सकें।

गैर-शैक्षणिक कार्यों का पुनर्गठन: शिक्षकों को प्रशासनिक और गैर-शैक्षणिक कार्यों से मुक्त करना या इन कार्यों को सहायक स्टाफ या प्रौद्योगिकी की मदद से पूरा करवाना।

प्रौद्योगिकी का उपयोग: डिजिटल उपकरणों और सॉफ्टवेयर का उपयोग करके मूल्यांकन, रिकॉर्ड-कीपिंग और संचार जैसे कार्यों को स्वचालित करना। इससे शिक्षकों का समय बचेगा।

सहयोग और संसाधन साझाकरण: शिक्षकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना ताकि वे पाठ योजनाओं, शिक्षण सामग्री और मूल्यांकन विधियों को साझा कर सकें। यह प्रत्येक शिक्षक के लिए कार्यभार को कम कर सकता है।

व्यावसायिक विकास में निवेश: शिक्षकों को उनके कौशल को बढ़ाने और समय बचाने वाली तकनीकों को सीखने के लिए नियमित और सुलभ व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करना।

फीडबैक और मूल्यांकन प्रक्रियाओं का सरलीकरण: मूल्यांकन और प्रतिक्रिया देने के तरीकों को प्रभावी और समय-कुशल बनाना, जैसे कि सहकर्मी प्रतिक्रिया (peer feedback) और स्व-मूल्यांकन (self-assessment) को बढ़ावा देना।

प्राथमिकताओं का निर्धारण: शिक्षकों को यह पहचानने में मदद करना कि कौन से कार्य सबसे महत्वपूर्ण हैं और अनावश्यक कार्यों को कम करना।

कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान: शिक्षकों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का समर्थन करने के लिए पहल करना, जैसे परामर्श सेवाएं और तनाव प्रबंधन कार्यक्रम।

न्यायपूर्ण कार्य वितरण: स्कूल प्रशासन द्वारा शिक्षकों के बीच कार्यभार का न्यायपूर्ण और सुनियोजित बंटवारा सुनिश्चित करना, ताकि किसी एक शिक्षक पर अत्यधिक बोझ न पड़े। इन उपायों को अपनाकर हम शिक्षकों के कार्यभार को कम कर सकते हैं, जिससे उन्हें अपनी शिक्षण भूमिका पर अधिक ध्यान केंद्रित करने, अपनी क्षमता बढ़ाने और अंततः छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार करने का अवसर मिलेगा। शिक्षकों को प्रशासनिक कार्यों और अन्य गैर-शैक्षणिक गतिविधियों में व्यस्त रखा जाता है,जिससे उनका शिक्षण कार्य प्रभावित होता है।

शिक्षक प्रभावशीलता और नई शिक्षा नीति 2020 में संबंध

नई शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक प्रभावशीलता में दादा और पौत्र जैसा सम्बन्ध एस नीति में वर्णित है। जिसमें शिक्षक को नीति का केंद्र बिन्दु मानकर नीति में दिए गए शिक्षण निर्देशों का पालन करते हुए अपने शिक्षण को प्रभावशाली बना सकता है। जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए शिक्षक प्रभावशीलता का महत्वपूर्ण योगदान माना गया है। एक प्रभावी शिक्षक न केवल छात्रों को विषय की गहराई में ले जाता है बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित भी करता रहता है। इसके साथ ही छात्रों में नवाचार और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करता है। मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना, वैश्विक और स्थानीय दृष्टिकोण को संतुलित करने का प्रयास करता है। शिक्षक प्रभावशीलता और नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 का गहरा संबंध है। NEP 2020 शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों को परिवर्तन के मुख्य वाहक के रूप में मानती है और उनकी प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रावधान करती है। यह नीति इस बात पर जोर देती है कि भारत में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों का सशक्तिकरण और उनका पेशेवर विकास अत्यंत आवश्यक है। यहाँ कुछ प्रमुख बिंदु दिए गए हैं जो शिक्षक प्रभावशीलता और NEP 2020 के बीच संबंध को दर्शाते हैं:

शिक्षकों के लिए उच्च सम्मान और सशक्तिकरण:

समाज में सम्मानजनक स्थान: NEP 2020 का उद्देश्य शिक्षकों को समाज में उनका योग्य और सम्मानजनक स्थान दिलाना है, ताकि शिक्षण पेशे में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकर्षित किया जा सके।

स्वायत्तता और लचीलापन: नीति शिक्षकों को पाठ्यक्रम डिजाइन, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन में अधिक स्वायत्तता देने पर जोर देती है, जिससे वे अपनी कक्षाओं में छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार प्रभावी ढंग से पढ़ा सकें।

पेशेवर विकास और क्षमता निर्माण:

निरंतर व्यावसायिक विकास (CPD): NEP 2020 में शिक्षकों के लिए प्रति वर्ष कम से कम 50 घंटे के निरंतर व्यावसायिक विकास का प्रावधान है। इसमें कार्यशालाएं, ऑनलाइन मॉड्यूल और सहकर्मी-शिक्षण के अवसर शामिल हैं, ताकि वे नवीनतम शिक्षण तकनीकों और शैक्षणिक प्रगति से अपडेट रहें।

बहु-विषयक प्रशिक्षण: नीति शिक्षकों को बहु-विषयक विषयों में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता को पहचानती है, जिसमें शिक्षा प्रौद्योगिकी, पर्यावरण अध्ययन और लिंग अध्ययन जैसे विभिन्न विषय शामिल हैं।

नेतृत्व और प्रबंधन प्रशिक्षण: स्कूल प्राचार्यों और शिक्षकों को नेतृत्व, स्कूल प्रबंधन और योग्यता-आधारित शिक्षा के कार्यान्वयन से संबंधित मॉड्यूल में CPD से गुजरना होगा।

शिक्षक शिक्षा में सुधार:

एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम: NEP 2020 ने 4-वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम की शुरुआत की है, जो सामग्री ज्ञान को शैक्षणिक कौशल के साथ जोड़ता है। इसका उद्देश्य ऐसे सुदृढ़ शिक्षकों को तैयार करना है जो समकालीन कक्षाओं की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हों।

बहु-विषयक संस्थान: धीरे-धीरे, शिक्षक शिक्षा को 2030 तक बहु-विषयक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में स्थानांतरित किया जाएगा।

भर्ती और नियुक्ति में पारदर्शिता और योग्यता:

शिक्षक पात्रता परीक्षा (TET) का सुदृढ़ीकरण: TETs को मजबूत किया जाएगा ताकि सामग्री और शिक्षाशास्त्र दोनों के संदर्भ में बेहतर परीक्षण सामग्री शामिल की जा सके। TETs को अब स्कूल शिक्षा के सभी चरणों (आधारभूत, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक) के शिक्षकों को कवर करने के लिए भी बढ़ाया जाएगा।

मेरिट-आधारित संरचना: शिक्षकों की पदोन्नति और वेतन वृद्धि केवल कार्यकाल या वरिष्ठता के आधार पर नहीं होगी, बल्कि प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन पर आधारित होगी, जो उत्कृष्ट शिक्षकों को प्रोत्साहित करेगी।

शिक्षकों की कमी को पूरा करना: विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में शिक्षकों के रिक्त पदों को समयबद्ध तरीके से भरने और स्थानीय शिक्षकों को नियुक्त करने पर जोर दिया जाएगा।

तकनीकी एकीकरण और डिजिटल साक्षरता:

डिजिटल शिक्षा और तकनीकी साधन: शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा और तकनीकी साधनों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा, जिससे वे छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकें।

राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF): शिक्षकों को NETF से जोड़ा जाएगा, जो ऑनलाइन प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करेगा।

समग्र विकास और 21वीं सदी के कौशल पर जोर:

होलीस्टिक विकास: शिक्षक अब केवल पाठ्यक्रम पूरा करने पर ध्यान केंद्रित नहीं करेंगे, बल्कि छात्रों के समग्र विकास, महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता, समस्या-समाधान कौशल और सामाजिक-भावनात्मक सीखने को बढ़ावा देंगे।

अनुभवात्मक शिक्षा: NEP 2020 शिक्षकों को अनुभवात्मक, समग्र, एकीकृत, पूछताछ-आधारित, खोज-उन्मुख, चर्चा-आधारित और विश्लेषण-आधारित शिक्षण को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है।

प्रदर्शन मूल्यांकन और जवाबदेही:

प्रदर्शन मानक: शिक्षकों के लिए प्रदर्शन मानक विकसित किए जाएंगे जो विभिन्न स्तरों पर उनकी भूमिका और आवश्यक competencies को स्पष्ट करेंगे।

आवधिक मूल्यांकन: शिक्षकों का नियमित अंतराल पर प्रदर्शन मूल्यांकन किया जाएगा, जिससे उनकी जवाबदेही सुनिश्चित होगी। संक्षेप में, NEP 2020 शिक्षकों को केवल एक ज्ञान प्रदाता के रूप में नहीं देखती, बल्कि उन्हें एक मार्गदर्शक, संरक्षक और सुविधा प्रदाता के रूप में देखती है। यह नीति शिक्षकों को सशक्त बनाने, उनके पेशेवर विकास को सुनिश्चित करने और उन्हें नवीनतम शैक्षणिक प्रथाओं से लैस करने पर केंद्रित है, ताकि वे 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने वाले छात्रों को तैयार कर सकें। यह समग्र दृष्टिकोण ही शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाएगा और भारत में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करेगा।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। इसने शिक्षकों के प्रशिक्षण, सशक्तिकरण, और उनके व्यावसायिक विकास के लिए ठोस कदम उठाए हैं। हालांकि, इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सरकार, शिक्षकों, और समाज के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। शिक्षक, समाज निर्माण के प्रमुख आधार हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का सफल क्रियान्वयन न केवल शिक्षकों को सशक्त बनाएगा, बल्कि भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में भी मदद करेगा।

सन्दर्भ सूची

- **बेंदा,नीलम(2023),**राजस्थान के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक-छात्र संबंधों का अध्ययन,इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन इकोनॉमिक्स एंड सोशल साइंसेज,14(5),286-293.
- **सिंह,मनोरमा & सिंह,नीतू(2022),**शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत आरक्षित एवं गैर-आरक्षित वर्ग के शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य-संतुष्टि, व्यावसायिक-प्रतिबद्धता एवं शिक्षक-प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन,शोध-प्रबन्ध रुपरेखा, दयालबाग एजुकेशनल, इंस्टिट्यूट दयालबाग,आगरा,1-26
- **सिह, मनोरमा (2022),** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 8(11),77-81
- **कनक एवं सिंह, सर्वेश (2020),** स्कूल के शिक्षको की शिक्षक प्रभावशीलता पर भावात्मक परिपक्वता, कठोरता और नौकरी से संतुष्टि और चयनित स्वतंत्र चरों के संयुक्त और व्यक्तिगत प्रभावों का अध्ययन, जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरती रेसेअर्चेस इन अलाइड एजुकेशन 17(2),1257-1261 |
- **कुमार,विवेकानन्द & नौटियाल,ए.के.(2019),**प्राथमिक स्तर पर कार्यरत टी.ई.टी. उत्तीर्ण एवं गैर-टी.ई.टी. शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन,रिमार्किंग एन ऐनालाईजेशन,3(12),72-80.
- **कौर (2018),** राजस्थान एवं पंजाब के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का सूचना प्रौधोगिकी के प्रति अभिवृति के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन, पी.एच.डी. शोध, तांतिया विश्वविध्यालय राजस्थान।
- **रेल्ली (2016),** शिक्षक प्रभावशीलता का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक सहसंबंध पर अध्ययन, शोध प्रबंध, 63 (2), 2002-2040
- **हरेन्द्र सिंह**: अनुसंधान एवं अध्यापक शिक्षा के मुद्दे, आर. लाल बुक प्रकाशन मेरठ।
- **डॉ. एस.पी**.: भारतीय इतिहास विकास एवं समस्याएँ, शारदा प्रकाशन इलाहबाद।
- **डॉ. शरतेन्दु**: अध्यापक शिक्षा, शारदा प्रकाशन इलाहबाद।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार।
- एन सी टी ई अधिनियम 2019 |
- एन सी टी ई अधिनियम 2014 |
- **शिक्षा मंत्रालय**, भारत सरकार की रिपोर्टस।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: **2584-0983 (Online)** Impact-Factor, **RPRI-3.87**
Volume-02, Issue-03, March- 2025
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2025/19

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

आकाश कुमार और डॉ. प्रतिभा सागर

For publication of research article title

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक प्रभावशीलता: एक गहन विश्लेषण"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-03, Month March, Year- 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com